रहे, तो भी राजा अथवा धनवान् की योनि में इस पृथ्वी पर ही रहेगा। परन्तु गुणों के मिश्रणों के कारण नीचे पतन भी हो सकता है। इस लोक के रजोगुणी-तमोगुणी मनुष्य यन्त्र के माध्यम से बलात् किसी उच्च लोक में नहीं पहुँच सकते। कभी-कभी रजोगुणी जन्मान्तर में प्रमत्त भी हो जाता है।

तमोगुण माया का सबसे अधम गुण है; अतः उसे **जघन्य** कहा गया है। यही कारण है कि तमोगुण की वृद्धि का परम भयंकर परिणाम होता है। मनुष्य योनि से नीचे पशु-पक्षी, सरीसृप, वृक्ष आदि अस्सी लाख योनियाँ हैं। तमोगुण के अनुपात से मनुष्य इन अधम योनियों में गिरता है। **तामसाः** शब्द का भाव यह है कि किसी उच्च गुण में अपने को न उठाकर जो निरन्तर तमोगुण में बने रहते हैं, उनका भविष्य परम अन्धकारमय है।

तमोगुणी और रजोगुणी मनुष्य चाहें तो कृष्णभावना की पद्धति से सत्त्वगुण के स्तर पर आरूढ़ हो सकते हैं। जो इस सुयोग का लाभ नहीं उठाते, वे निश्चित रूप से अधम गुण-वृत्ति में ही रहेंगे।

नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति।
गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति।।१९।।

न=नहीं; **अन्यम्**=अन्य किसी को; **गुणेभ्यः**=तीनों गुणों के अतिरिक्त, **कर्तारम्**=कर्ता; **यदा**=जिस काल में; **द्रष्टा अनुपश्यति**=द्रष्टा भलीभाँति देखता है; **गुणेभ्यः च**=और तीनों गुणों से; **परम्**=अति परे; **वेत्ति**=जानता है; **मत् भावम्**=मेरी परा प्रकृति को; **सः**=वह; **अधिगच्छति**=प्राप्त होता है।

अनुवाद

जिस काल में तू सब कर्मों में तीनों गुणों के अतिरिक्त किसी दूसरे को कर्ता नहीं देखेगा और परमेश्वर को इन गुणों से परे देखेगा, उस समय मेरी परा प्रकृति को प्राप्त होगा।।१९।।

तात्पर्य

यथार्थ महात्माओं से त्रिगुणमय कर्मों के तत्त्व को जानकर भलीभाँति हृदयंगम कर लेने से इन सभी से मुक्त हुआ जा सकता है। सच्चे गुरु श्रीकृष्ण हैं और वे अर्जुन को यह आध्यात्मिक विद्या प्रदान कर रहे हैं। इस भाँति सब मनुष्य कृष्णभावनाभावित महापुरुषों से त्रिगुणमय कर्मों के तत्त्व को ग्रहण करें। नहीं तो, जीवन दिग्भ्रान्त रहेगा। योग्य गुरु के सदुपदेश से जीवात्मा अपने आध्यात्मिक स्वरूप के, प्राकृत देह के तथा इन्द्रियों के तत्त्व को जान जाता है। वह यह भी जान जाता है कि माया में बँध कर वह किस प्रकार त्रिगुणों के आधीन हो गया है। इन गुणों की आधीनता में वह बिल्कुल असहाय है; किन्तु यथार्थ स्वरूप का बोध हो जाने पर उस भगवत्परायण शुद्ध सत्त्व में फिर से निष्ठ हो सकता है, जो तीनों गुणों से परे है। वास्तव में जीव नाना कर्मों का कर्ता नहीं है। गुणमय देह में स्थित होने के कारण ही वह विवश होकर कर्तापन को प्राप्त हो गया है। पारमार्थिक आचार्य की